अध्याय-पंचम

शोध सारांश व सुझाव

अध्याय - पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 शोध सारांश -

भाषा का अधिगम प्रक्रियाओं सें गहरा संबंध हैं। भाषा सम्पूर्ण प्रक्रिया में अदभुत खोज है। हमारे अंदर में जो कुछ भी विद्यमान होता है, जो भी विचार उमट रहे होते है, जो भी भावनाए उदवेलित हो रही होती हैं, और जो कुछ भी हम दुसरों को बताना या जताना चाहते हैं। इस अभिव्यक्ति के लिए हम जिस माध्यम का सहारा ले सकते है,वो सब कुछ भाषा के अंर्तगत आता हैं। कुछ लोग अपने विचारों को बडे ही प्रभाव पूर्ण तरीके से बोलकर एवं लिखकर व्यक्त करते है। वही दुसरी तरफ ऐसे भी भाषा अधिगम में कठिनाई होने के कारण कुशलता पूर्वक व्यक्त नहीं कर पाते है। ठीक ऐसा ही विद्यार्थियों के साथ भी होता है। माध्यमिक कक्षाओं यह देखा गया हैं कि उनके उनकी मातृभाषा मराठी में प्रश्न किये जाने पर भी उत्तर देने में कठिनाई का अनुभव करतें है। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयों किस प्रकार है। छात्र एवं छात्राओं का कठिनाईयाँ में किस प्रकार अन्तर है। लेखन कौशल में कठिनाई कहाँ आती है। इस कठिनाईयों का प्रमाण किस क्षेत्र में जादा है। ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं का कठिनाईयों में क्या अंतर है। यह ढुंढने के लिए इस शोध के विषय का चयन किया गया है।

सारांश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इस अध्याय में लघुशोध का सारांश एवं अध्याय चतुर्थ में दिये गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या कथन –

प्रस्तुत शोध में शोध कर्ता नें निम्न विषय पर कार्य किया है।

" कक्षा 8 के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में मराठी भाषा अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन।"

5.3 शोध कार्य के चर –

❖ **स्वतंत्र चर** – "साधारण प्रयोग कर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता हैं, और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण होता हैं, उसे स्वतंत्र चर कहते हैं।"

- **प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर है।**

▪ कक्षा 8 के विद्यार्थी

1) छात्र – छात्राओं ।

2) ग्रामीण – शहरी ।

❖ **आश्रित चर** – स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तित होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता हैं, उसे आश्रित चर कहते हैं।"

- **प्रस्तुत अध्ययन में आश्रित चर हैं।**

1) मराठी भाषा की अधिगम कठिनाईयाँ।

5.4 शोध कार्य के उद्देश्य –

1 कक्षा 8 के छात्र व छात्राओं में मराठी भाषा अधिगम कठिनाइयों में अन्तर ज्ञात करना।

2 कक्षा 8 के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में मराठी भाषा अधिगम कठिनाइयों में अन्तर ज्ञात करना।

3 कक्षा 8 के शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा अधिगम कठिनाइयों में अन्तर ज्ञात करना।

4 कक्षा 8 के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा अधिगम कठिनाइयों में अन्तर ज्ञात करना।

5 कक्षा 8 के अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्र व ग्रामीण क्षेत्र के छात्र में मराठी भाषा अधिगम कठिनाइयों में अन्तर ज्ञात करना।

6 कक्षा 8 के अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्राओं व ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं में मराठी भाषा अधिगम कठिनाइयों में अन्तर ज्ञात करना।

5.5 अध्ययन की परिकल्पनायें –

1. कक्षा 8के अध्ययनरत छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा में होनेवाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कक्षा 8के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कक्षा 8के शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कक्षा 8के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कक्षा 8के अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्र व ग्रामीण क्षेत्र के छात्र द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. कक्षा 8के अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्राओं व ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं है।

5.6 शोध न्यादर्श –

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु में न्यादर्श के रूप में महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले के पाथर्डी तहसील से 3 शहरी विद्यालय व 3 ग्रामीण विद्यालय के कक्षा 8 के विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि सें चुना गया। इसमें कुल विद्यार्थी संख्या 120 है।

शहरी विद्यार्थी – कुल 60 (छात्र–30) (छात्रा–30)

ग्रामीण विद्यार्थी – कुल 60 (छात्र–30) (छात्रा–30)

5.7 उपकरण और विधि –

शोधकर्ता ने शोधकार्य के लिए सर्वेक्षण विधी का चयन किया हैं। शोध कर्ता ने कक्षा आठवी के विद्यार्थियों की मराठी भाषा में होनेवाली अधिगम कठिनाईयाँ देखने के लिए लेखन कौशलं के आधार पर शोधकर्ता द्वारा स्वयंः मराठीभाषा विषय नैदानिक परीक्षण पत्र का निर्माण किया। इस परीक्षण में लेखन कैशलं के चार घटकों शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्यावहारिक व्याकरण,व लेखन कों लिया गया है।

5.8 आंकडो का विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध कार्य में शहरी व ग्रामीण विद्यालय में छात्र एवं छात्राओं द्वारा की गई गलतियों का ऑकडे एकत्रित किये गये उनके विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए प्रथम प्राप्त ऑकडों से उनका मध्यमान,प्रमाण विचलन, टि मान निकाला गया है।

5.9 शोध के निष्कर्ष –

प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात विद्यार्थियों को मराठी भाषा के अधिगम में शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्याकरण तथा लेखन में कठिनाई होती है।

1 कक्षा 8 के अध्ययनरत छात्र व छात्राओं में मराठी भाषा में होनेवाली कठिनाईयां में सार्थक अंतर पाया गया। छात्रों कों छात्रोंओं से अधिक मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयां होती हैं।

- ✷ शब्दज्ञान व वाक्यरचना में छात्र व छात्राओं में अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अंतर हैं।
- ✷ व्याकरण व लेखन मे छात्र व छात्राओं में अधिगम कठिनाई में सार्थक अंतर नही है।

2 कक्षा 8के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थियों कों शहरी विद्यार्थियों सें अधिक मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयाँ होती है।

- ✷ शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्याकरण व लेखन इस चार ही घटकों में ग्रामीण विद्यार्थियों को शहरी विद्यार्थियों से अधिक अधिगम में कठिनाईयां आती है।

3 कक्षा 8के शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

4 कक्षा 8 के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं द्वारा मराठी भाषा

अधिगम कठिनाइयों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण छात्र कों छात्रोंओं सें अधिक मराठीभाषा अधिगम में कठिनाईयां होती हैं।

- ✷ शब्दज्ञान व वाक्यरचना में छात्र कों छात्राओं सें अधिक अधिगम में कठिनाईयों होती हैं।
- ✷ व्याकरण व लेखन में छात्र व छात्राओं में अधिगम कठिनाई में कोई अंतर नही है।

5 कक्षा 8के अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्र व ग्रामीण क्षेत्र के छात्र द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के छात्र कों शहरी क्षेत्र के छात्र सें अधिक मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयाँ होती हैं।

- ✷ शहरी छात्र की अपेक्षा ग्रामीण छात्र कों शब्दज्ञान,वाक्यरचनाव लेखन में अधिगम कठिनाइयाँ अधिक होती है।
- ✷ शहरी छात्र व ग्रामीण छात्र कों वाक्यरचना में होने वाली कठिनाइयाँ में में कोई अंतर नही है।

6 कक्षा 8के अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्राओं व ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं द्वारा मराठी भाषा में होने वाली अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अन्तर हैं। ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं कों शहरी क्षेत्र के छात्राओं सें अधिक मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयाँ होती है।

- ✷ ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं को शहरी क्षेत्र की छात्राओं सें अधिक कठिनाईयाँ शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्याकरण में होती हैं।

5.10 शैक्षिक महत्व –

प्रस्तुत शोध में कक्षा 8 के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की मराठी भाषा अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन किया गया है। मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयाँ, कहाँ–कहाँ और क्यों हो रही है, छात्र एवं छात्राओं में अधिगम की कठिनाईयों में क्या अंतर है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों कों अधिगम कठिनाईयों में क्या अंतर है। इन समस्याओं के बारे में शिक्षक उन कठिनाईयों को दूर कर सकेंगे और छात्र व छात्राओं की मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयाँ कम होगी।

उपयुक्त निष्कर्षा या परीणामों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के मराठी भाषा अधिगम कठिनाईयों के निवारण के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं।

- शिक्षकों नें मराठी भाषा विषय पढते समय पाठ्यपुस्तकों की, विषय वस्तु पर नहीं बल्कि भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को इस प्रकार के प्रश्न अभ्यासार्थ देने चाहिए, जिससे उनका शब्द भण्डार बढें। छात्रों को सुनने व पढने के अवसर इस दृष्टि से दिये जाये कि उनके शब्द भण्डार में उत्तरोत्तर वृध्दि हो।
- भाषा संबंधित खेलों का आयोजन किया जाये जैसे शब्द निर्माण का खेल तुकबंदी, अंन्ताक्षरी, समस्या समाधान आदि। इससे विद्यार्थियों का शब्द भण्डार विकसित होता है।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों कों मराठी भाषा अध्यापन करते समय एक अक्षर देकर उस अक्षर के जितने ही शब्द, वाक्य बनते है, वही शब्द विद्यार्थियों को बताना चाहिए। तो इनका परिणाम विद्यार्थियों की शब्दसंपदा एवं नवीन शब्द भण्डार में वृध्दि हो जायेगा।
- छात्र को छात्राओं सें अधिक मराठी भाषा अधिगम में कठिनाईयाँ आती है। इसलिये पालकों एवं शिक्षकों को छात्रं पर अधिक लक्ष्य केन्द्रित करने की आवश्यकता है।
- छात्रों का अध्ययन में रूचि निर्माण करने के लिए शिक्षकों को उनकी समस्या, प्रश्न को निर्देशन करने आवश्यकता है।
- छात्रों को लेखन संबंधित गृहकार्य देना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिका की अशुद्धियों की जाँच करनी चाहिए तथा अंको को शब्दों में लिखकर अध्ययन करवाना चाहिए।

- ग्रामीण विद्यार्थियों कों भाषा विषय के पारिभाषीक शब्द का अर्थ बताना चाहिए।
- छात्रों कों पाठ्य–सामग्री को पढने के लिए समुचित समय दिया जाना चाहिए।
- ऐसे क्रियाकलापो का आयोजन जिससे छात्रों अपनी पठन संबंधि त्रृटियों कों स्वयं दूर करने का प्रयास करें।
- शहरी विद्यार्थियों सें ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को अधिक अधिगम में कठिनाई है। ग्रामीण विद्यालय के शिक्षक कों भाषा अधिगम के अंर्तगत आनेवाले कौशलों के विकास की और विशेष ध्यान देना चाहिए।
- ग्रामीण विद्यालय में मराठी भाषा अध्यापन करने के लिए मराठी विषय शिक्षकों को प्रशिक्षण देने कि जरूरी है।

5.11 भावी शोध हेतु सुझाव

- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की मराठी भाषा में होनेवाली अधिगम कठिनाईयों का निदानात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- बडा न्यादर्श लेकर इसी कार्य को उच्च स्तर पर अध्ययन किया जा सकता है।
- मराठी भाषा अधिगम कठिनाई पर उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अनुदेशात्मक सामग्री का वापर कर शब्दज्ञान, वाक्यरचना संबंधि होनेवाला प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- छात्रो को छात्राओं से अधिक कठिनाईयाँ मराठी भाषा अधिगम में होने की कारणों का अध्ययन किया जा सकता है।
- उच्च एवं निम्न सफलता प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों के रूप में अधिगम शैली का अध्ययन किया जा सकता है।